आपातकाल में सृजन फुलवारी

दिनकर राव दिनकर

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

दिनकर राव दिनकर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-184-8

संपादक **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्रसंदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष (कार्या.) 07633253159

मोबाईल 9424765259

ईमेल antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण2020, दिनकर राव दिनकर

मूल्य50.00 रूपये

मुद्रक शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DINKAR RAV DINKAR

वैधानिक चेतावनीः इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तराशब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वादविवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीपटीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	इबादत	6
2.	क़लम	7
3.	चित्कार	8
4.	यहीं सत्य है	9
5.	हालात	10
6.	गाडफादर	11
7.	चेतना दान	12
8.	मरघट	13
9.	नज़र	14
10.	विभीषिका	15
11.	पिता	16
12.	जयगान कहाँ	17
13.	करतूत	18
14.	लाकडाउन	19
15.	क़िरदार	20
16.	इतवार	21

इबादत

बहुत सोचना,,,, सर झुकाने से पहले
खुदा,,,,, पत्थरों को बनाने से पहले

पिघलते नहीं,,,,, बुत कभी ज़िन्दगी में
हकीकत में आँसू,,,, बहाने से पहले

भला है इसी में,,,, मुहब्बत हो खुद से
सबक सीख लो,,, दिल लगाने से पहले

जवानी को,,, काबू में करना पड़ेगा
मुहब्बत में दामन,,,, जलाने से पहले

अँधेरों में दिनकर को,,, रहना पड़ा है
उजाला सभी को,,, दिखाने से पहले

क़लम

तोप गोले बंदुकों की मार क्या है
इस क़लम के सामने तलवार क्या है

ज़िन्दगी में रंग है पल पल बदलता
आदमी बतला तेरा क़िरदार क्या है

नज़्म कह दूँ गीत कह दूँ या रूबाई
लिख दिया जो आपने सरकार क्या है

वक़्त की रफ़्तार भी लिख्खो ग़ज़ल में
हर घड़ी ये दर्द का बाज़ार क्या है

मयकदे ही मयकदें हैं ज़िन्दगी में
दिलजलों से पूछिए कि प्यार क्या है

चित्कार

चीखता फिरता यहाँ इंसान है
मंदिरों में अब कहाँ भगवान है

है कहाँ अमृत का घट मोहन बता
प्रीत मीरा की लिए विषपान है

कौन लायेगा यहाँ संजीवनी
बुत बना कलयुग में जब हनुमान है

लिख रहे थे वक़्त भक्तिकाल का
सूर तुलसी अब कहाँ रसखान है

छोड़कर माँ बाप को हालात में
आज बेटे फर्ज से अंजान है

क्या करें दिनकर दिखाकर रौशनी
जब अँधेरा आदमी की शान है

यही सत्य है

अगर सारी बातें भुलाई न होती
भले आदमी, जगहँसाई न होती

नहीं जानता स्वाद रोटी का कोई
पिता ने अगर से कमाई न होती

कहाँ नींद आती सुनो बचपने में
अगर माँ ने लोरी सुनाई न होती

अगर कोख में बेटियों को बचाते
तो सूनी किसी की कलाई न होती

अमन चैन घर घर में होता यहाँ पर
अगर भाईयों में लड़ाई न होती

पड़ोसी न जलते पड़ोसी के घर से
अगर खिड़कियाँ ही लगाई न होती

न होती ये दुनिया न होते ये रिश्ते
जो दिल में मुहब्बत समाई न होती

हालात

आदमी को अब कहाँ आराम है
हर सुबह खूँ की पसीना शाम है

है मशीनी युग तो भूखा आदमी
कारखाने में कहाँ अब काम है

खेत में कटती फसल उम्मीद की
आज मंडी में बिगड़ते दाम है

कर्ज में डूबे था अब सूखा पड़ा
खुदकुशी किसान का ईनाम है

पी रहा प्याला ज़हर का रात भर
आँसुओं का फिर सुबह से जाम है

गाँव की पगडंडियाँ सड़कें बनी
खेत कालोनी में अब गुमनाम है

जो हकीकत वक़्तियत लिखता रहा
आज शायर मुफ्त में बदनाम है

गाडफादर

पी हलाहल आज शंकर कौन है
आदमी अमृत का सागर कौन है

क्यों पिघलता ही नहीं दिल दर्द पर
मोम के पुतले में पत्थर कौन है

कुछ दहाड़ें उठ रही है मजहबी
इस वतन में आज बाबर कौन है

सनसनाते तीर भाले बर्छियाँ
वहशतों का गाडफादर कौन है

है लगा जमघट करोड़ों देवता
कौन जाने आज रहबर कौन है

जगमगाते दीप जुगनू हैं बहुत
आज दिनकर के बराबर कौन है

चेतना दान

चमक रहे हैं नील गगन पर बूटें चाँद सितारों के
काँधे झुके हुए हैं डोली लेकर आज कहारों के

वसुंधरा पर वेग पवन का सर्द बताते ये जंगल
विश्व मोहिनी चंद्रवती का अभ्युदय होगा मंगल

सँध्या के स्पर्श मात्र से अँधियारे फिरते द्वारे
दीपक ने विद्रोह किया तो जुगनू चमक उठे सारे

देह देह आलिंगन में है मादकता आच्छादित है
अवचेतन संसार स्वयं पर जाने कितना मोहित है

मन वीणा की तान लिए निष्प्राण मनुज में प्राण भरे
आज सृजन से रिक्त हृदय में समर्थ चेतना दान करे

मरघट

मृत्यु का मुख पर घूँघट है
हर आँखों में अब मरघट है

क्यों देख रहा काले बादल
असहाय मनुज होकर पागल
विष घोल रही उन्मुक्त हवा
विज्ञान बताता नहीं दवा
यम के घोड़ों की आहट है
हर आँखों में अब मरघट है

हम बंदीगृह से मुक्त नहीं
जीवन साधन से युक्त नहीं
हम दोषी यहाँ कहें किसको
साँसों में गृहण किए विष को
अंतर्मन में घबराहट है
हर आँखों में अब मरघट है

गूँगी गलियाँ वीरान सड़क
अब कहाँ गई वो तड़क भड़क
गाँवों नगरों के हाल बुरे
हैं लोग घरों में डरे डरे
बस बाँट जोहते पनघट है
हर आँखों में अब मरघट है

नज़र

था नहीं कोई इरादा पर ख़बर करना पड़ा
आज फिर दिल को मुहब्बत की नज़र करना पड़ा

वक़्त के करतब अनोखे अनवरत चलते रहे
दृश्य भी हमको छबीले स्वप्न बन छलते रहे
प्रीत का मधुमास मन को दिग्भ्रमित करता रहा
आसमाँ पर रंग फूलों के सदा भरता रहा
चाँद तारों के नज़ारों पर गुज़र करना पड़ा
आज फिर दिल को मुहब्बत की नज़र करना पड़ा

व्योम के प्राकल्प की अद्भुत छटा पर्वत शिखर
है समाहित भावना में बादलों को पार कर
नृत्य करते मोर के पाँवों में सावन का नमन
या पपीहा कर रहा बूंदों का जैसे आचमन
धूप को मुठ्ठी में भरकर ये सफ़र करना पड़ा
आज फिर दिल को मुहब्बत की नज़र करना पड़ा

इन पलासों की दहक में प्रीत है अनुराग है
पीर का अतिरेक है पर ये गुलाबी फाग है
घुल रहे हैं रंग कितने धुल रहा हर मैल है
मन के वृन्दावन में मंचित अनुगृहित ये खेल है
आस्था विश्वास के क़दमों में सर करना पड़ा
आज फिर दिल को मुहब्बत की नज़र करना पड़ा

विभीषिका

बुद्ध की पावन धरा पर, युद्ध की विभीषिका
पूछता है आज दिनकर, घोष ये किसने लिखा?

थे विराजित धर्म रथ पर
अग्रसर थे कर्म पथ पर
लक्ष्य पर ही ध्यान रत थे
विश्व के कल्याण रत थे
व्रत सदाचारी मनुज का, क्यों यहाँ दम तोड़ता
पूछता है आज दिनकर, घोष ये किसने लिखा?

देवता सी आन जिनकी
दिव्यता पहचान जिनकी
कुल प्रबंधक सूर्य हैं वो
चंद्र सी मुस्कान जिनकी
क्यों असुर से मित्रता कर, की स्वयं से शत्रुता
पूछता है आज दिनकर, घोष ये किसने लिखा?

कर रहे हैं मान मर्दन
आरियों के बीच गर्दन
कौंधती है क्यों धरा पर
बिजलियों के साथ गर्जन
रक्त के लश्कर चले हैं, धर्म की लेकर ध्वजा
पूछता है आज दिनकर, घोष ये किसने लिखा?

पिता

मौन रहकर ज़िन्दगी की साधना में लिप्त है
खूँ पसीने की कमाई फर्ज पर संक्षिप्त है

कर रहा है इक पिता निर्वाह खुद के दाँव पर
पार है परिवार की वैतरणी जिसकी नाव पर

कर्म से अनुबंध कर हर पल जुटाता है खुशी
खिलखिलाती है तभी बच्चों के चेहरे पर हँसी

दे रहा है हौसला हर इल्म जो सारे हुनर
जिसके बूते ज़िन्दगी की आलिशाँ हो रहगुजर

प्यास है औलाद भी उम्मीद के परिणाम दे
भूख पे करके फतह कुछ थालियाँ ईनाम दे

ईद दिवाली सी खुशियाँ रोज़ हो तुझको नज़र
बाप की आँखों में बच्चे है तेरे कल की फिकर

जयगान कहाँ

है बंशी में अब तान कहाँ
मन वीणा में है प्राण कहाँ
है शंखनाद अब मृत्यु का, जयघोष कहाँ जयगान कहाँ?

इक प्रश्न चिन्ह आलापों पर
गूँजा तबले की थापों पर
क्यों गृहण लगा है मंदिर में
श्री राम नाम के जापों पर
विपदा की इन बरसातों में
गिरधर को रक्षा भान कहाँ
है शंखनाद अब मृत्यु का, जयघोष कहाँ जयगान कहाँ?

घर घर में कीर्तन जारी है
धड़कन धड़कन पे भारी है
विष भरा हुआ हर साँसों में
जाने की सबकी बारी है
सूनी सड़कें श्मशान बनी
ज़िन्दा तन में हैं जान कहाँ
है शंखनाद अब मृत्यु का, जयघोष कहाँ जयगान कहाँ?

करतूत

बात के कौवों को कब विश्वास है
ये तो चमगादड़ का सत्यानाश है

जिस्म के उपवन में हसरत के हिरन
भर कुँचाले थक गए करते शयन
मौन में फिर एक दावानल उठा
छल के हाथों आज जंगल जल उठा

हौसलों का बाघ अपनी माँद में
है हुनर की लोमड़ी उन्माद में
धर्म का वानर रहा सर पीटता
कर्म की चिड़िया को हरदम कोसता

गज ने खोया शीश फिर विश्वास में
आत्मा के हंस चल आकाश में

लाकडाउन

त्योहार लाकडाउन है तीज लाकडाउन
इंसा की निगाहों में हर चीज लाकडाउन

फैला हुआ कोरोना उजड़ा हुआ है गुलशन
हो फूल कली पैदा वो बीज लाकडाउन

बाँटी थी गरीबों के घर बार बसाने को
सरकार जमीनों की वो लीज लाकडाउन

फाईल के पूछने पर जो नाक थे सिकुड़ते
दफ्तर के बाबुओं की हर खीज लाकडाउन

हल्के का है पटवारी तलवार भी दोधारी
खसरे में दाखिला औ ख़ारीज लाकडाउन

क़िरदार

हर तरफ बहरूपिया क़िरदार है
उम्र पचपन की टपकती लार है

है सजा बिस्तर हसीनों के लिए
जिसपे दौलत का लगा अंबार है

आईना बनकर खड़ा सच सामने
वासना पुरजोर झूठा प्यार है

कब तलक नज़रें झुकाएँ आदमी
नग्नता का जब भरा बाज़ार है

कमसिनी कलियों की भँवरा खा गया
क्यों चमन में आज हाहाकार है

है छिपा दिनकर कहीं अब इसलिए
रौशनी की हर किरण मक्कार है

इतवार

रुख करो अब जींस के बाज़ार का
ओल्ड फैशन हो गया सलवार का

पारलर जाओ करो शापिंग बड़ी
हो सहीं उपयोग भी इतवार का

मर्सिडीज होने लगी सस्ती सुनों
मोह त्यागो अब खटारा कार का

है मोबाइल में घड़ी जब फ्रंट पर
ध्यान रख्खो वक़्त की रफ्तार का

बार ग़र सारे शहर के बंद हों
लो मज़ा महुए की पहली धार का!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

दिनकर राव दिनकर

वार्ड नं.९, पंडालिक डेकोरेशन,
वारासिवनी, जिला-बालाघाट
(मध्यप्रदेश) ४८१३३१

Email- 9753738786drb@gmail.com
Mobile - 9753738786

वास्तविकता तो यहीं है कि सृजन और सृजनकर्ता के अग्निपरीक्षा की घड़ी है, स्वस्थ सामाजिक चिंतन आज की महती आवश्यकता है। अन्तरा शब्दशक्ति का नव प्रयास आपातकाल के इस दौर में बेहतर भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

एक रचनाकार को लम्बा समय मिला है भीड़ से अलग होकर स्वयं से साक्षात्कार करने का। चरित्र निर्माण के देश के उत्थान के और विश्व कल्याण के महायज्ञ में आहूत हो जाने का। सृजन वह शक्ति है जिससे काल के रूख को मोड़ा जा सकता है।

कोरोना की महामारी ने सबको घर में बंद कर दिया है, हमसब सोशल मिडिया पर ही मिल सकते हैं, तो इस समय का और इस प्लेटफार्म का बेहतर उपयोग होना चाहिए।

हर विधा के रचनाकारों को एक मंच पर लाने का श्रेय अन्तरा शब्दशक्ति को जाता है सतत कार्यशील रहकर हजारों किताबों का प्रकाशन ढ़ेर सारे विमोचन और बहुतेरे सामाजिक कार्यक्रमों को करवाना प्रशंसनीय है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-184-8

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/